फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा (क़िस्त : 19)

Peeri Muridi Ki Shar-ee Haisiyyat (Hindi)

पीरी मुरीदी की शर-ई हैसिय्यत

(मअ़ दीगर दिलचस्प सुवाल जवाब)

येह रिसाला शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ के म-दनी मुज़ा-करे नम्बर 8 के मवाद समेत अल मदीनतुल इल्मिय्या के शो'बे "फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा" ने नई तरतीब और कसीर मवाद के साथ तय्यार किया है।

पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तरजमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा । ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(مستطرف ج ۱ص ۴۰ دارالفکربیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عساکرج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکربیروت)

किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक-त-बतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

मजलिसे तराजिम हिन्द (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه दा'वते इस्लामी की मजलिस "अल मदीनतुल इल्मिय्या" ने येह रिसाला उर्दू ज़बान में पेश किया है और मजलिसे तराजिम ने इस रिसाले का हिन्दी रस्मुल ख़त करने की सआदत हासिल की है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह ग़-लती पाएं तो मजलिस को सफ़ह़ा और सत़र नम्बर के साथ Sms, E-mail, Whats App या Telegram के ज़रीए इत्तिलाअ़ दे कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

म-दनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं !!!

...राबित़ा :-

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात ☎ 9327776311

E-mail : tarajim.hind@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = ئ	ु = ۇ	आ = آ	य = ی	ह = ه	व = و	न = ن

पहले इसे पढ़ लीजिये !

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के बानी, शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने मख़्सूस अन्दाज़ में सुन्नतों भरे बयानात, इल्मो ह़िक्मत से मा'मूर म-दनी मुज़ा-करात और अपने तरबियत याफ़्ता मुबल्लिग़ीन के ज़रीए थोड़े ही अ़र्से में लाखों मुसल्मानों के दिलों में म-दनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया है, आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सोह़बत से फ़ाएदा उठाते हुए कसीर इस्लामी भाई वक़्तन फ़ वक़्तन मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर होने वाले म-दनी मुज़ा-करात में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के मौज़ूआ़त म-सलन अ़क़ाइदो आ'माल, फ़ज़ाइलो मनाक़िब, शरीअ़त व त़रीक़त, तारीख़ व सीरत, साइन्स व तिब, अख़्लाक़िय्यात व इस्लामी मा'लूमात, रोज़ मर्रा मुआ़-मलात और दीगर बहुत से मौज़ूआ़त से मु-तअ़ल्लिक़ सुवालात करते हैं और शैखे़ त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उन्हें ह़िक्मत आमोज़ और इश्क़े रसूल में डूबे हुए जवाबात से नवाज़ते हैं।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इन अ़त़ा कर्दा दिलचस्प और इल्मो ह़िक्मत से लबरेज़ म-दनी फूलों की ख़ुश्बूओं से दुन्या भर के मुसल्मानों को महकाने के मुक़द्दस जज़्बे के तह़त अल मदीनतुल इल्मिय्या का शो'बा **"फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा"** इन म-दनी मुज़ा-करात को काफ़ी तरामीम व इज़ाफ़ों के साथ **"फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा"** के नाम से पेश करने की सआ़दत ह़ासिल कर रहा है। इन तह़रीरी गुलदस्तों का मुत़ा-लआ़ करने से اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अ़क़ाइदो आ'माल और ज़ाहिरो बात़िन की इस्लाह़, मह़ब्बते इलाही व इश्क़े रसूल की ला ज़वाल दौलत के साथ साथ मज़ीद ह़ुसूले इल्मे दीन का जज़्बा भी बेदार होगा।

इस रिसाले में जो भी ख़ूबियां हैं यक़ीनन रब्बे रह़ीम عَزَّوَجَلَّ और उस के मह़बूबे करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़त़ाओं, औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की इनायतों और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की शफ़्क़तों और पुर ख़ुलूस दुआ़ओं का नतीजा हैं और ख़ामियां हों तो उस में हमारी गै़र इरादी कोताही का दख़्ल है।

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

28 शव्वालुल मुकर्रम 1437 सि.हि./2 अगसत 2016 सि.ई.

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

पीरी मुरीदी की शर-ई हैसिय्यत

(मअ़ दीगर दिलचस्प सुवाल जवाब)

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (32 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मा'लूमात का अनमोल ख़ज़ाना हाथ आएगा ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो मुझ पर जुमुआ़ के दिन और रात 100 मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की 100 ह़ाजतें पूरी फ़रमाएगा। 70 आख़िरत की और 30 दुन्या की और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देगा जो उस दुरूदे पाक को मेरी क़ब्र में यूं पहुंचाएगा जैसे तुम्हें तह़ाइफ़ पेश किये जाते हैं, बिला शुबा मेरा इ़ल्म मेरे विसाल के बा'द वैसा ही होगा जैसा कि मेरी ह़यात में है।[(1)]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب !   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पीरी मुरीदी की शर-ई हैसिय्यत

सुवाल : बैअ़त लेना और बैअ़त करना कैसा है ? नीज़ पीरी मुरीदी की शर-ई हैसिय्यत भी बयान फ़रमा दीजिये।

(1) ...... جمع الجوامع، قسم الاقوال، حرف الميم، ۷/۱۹۹، حديث: ۲۲۳۵۵

www.dawateislami.net

जवाब : बैअ़त का लुग़वी मा'ना बिक जाना और इस्तिलाहे शर-अ़ व तसव्वुफ़ में इस की मु-तअ़द्दद सूरतें हैं जिन में एक येह है कि किसी पीरे कामिल के हाथों में हाथ दे कर गुज़श्ता गुनाहों से तौबा करने, आयिन्दा गुनाहों से बचते हुए नेक आ'माल का इरादा करने और इसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त का ज़रीआ़ बनाने का नाम बैअ़त है। येह सुन्नत है, आज कल के उ़र्फ़े आ़म में इसे "पीरी मुरीदी" कहा जाता है। बैअ़त का सुबूत कुरआने करीम में मौजूद है चुनान्चे पारह 15 सूरए **बनी इसराईल** की आयत नम्बर 71 में ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

يَوْمَ نَدْعُوْا كُلَّ اُنَاسٍۭ بِاِمَامِهِمْ **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** जिस दिन हम हर जमाअ़त को उस के इमाम के साथ बुलाएंगे।

इस आयते मुबा-रका के तह़्त **मुफ़स्सिरे** शहीर, **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : इस से मा'लूम हुवा कि दुन्या में किसी सालेह़ (नेक) को अपना इमाम बना लेना चाहिये शरीअ़त में "तक़्लीद" कर के और त़रीक़त में "बैअ़त" कर के ताकि ह़श्र अच्छों के साथ हो। अगर सालेह़ (नेक) इमाम न होगा तो उस का इमाम शैत़ान होगा। इस आयत में तक़्लीद, बैअ़त और मुरीदी सब का सुबूत है।(1)

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत

1..... नूरुल इरफ़ान, पारह : 15, बनी इसराईल, तह़्तल आयह : 71

www.dawateislami.net

मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : बैअ़त बेशक सुन्नते मह़बूबा (पसन्दीदा सुन्नत) है, इमामे अजल, शैखुश्शुयूख़ शहाबुल ह़क़्क़े वद्दीन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه की अ़वारिफ़ शरीफ़ से शाह **वलिय्युल्लाह** देहलवी की "क़ौलुल जमील" तक इस की तसरीह़ और अइम्मा व अकाबिर का इस पर अ़मल है और रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

اِنَّ الَّذِیْنَ یُبَایِعُوْنَكَ اِنَّمَا یُبَایِعُوْنَ اللّٰهَ ؕ یَدُ اللّٰهِ فَوْقَ اَیْدِیْهِمْ ۚ
(پ۲۶، الفتح:۱۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो तुम्हारी बैअ़त करते हैं वोह तो **अल्लाह** ही से बैअ़त करते हैं, उन के हाथों पर **अल्लाह** का हाथ है।

और फ़रमाता है :

لَقَدْ رَضِیَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِیْنَ اِذْ یُبَایِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ
(پ۲۶، الفتح:۱۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** राज़ी हुवा ईमान वालों से जब वोह उस पेड़ के नीचे तुम्हारी बैअ़त करते थे।

और बैअ़त को ख़ास ब जिहाद समझना जहालत है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

یٰۤاَیُّهَا النَّبِیُّ اِذَا جَآءَكَ الْمُؤْمِنٰتُ یُبَایِعْنَكَ عَلٰۤى اَنْ لَّا یُشْرِكْنَ بِاللّٰهِ شَیْــٴًـا وَّ لَا یَسْرِقْنَ وَ لَا یَزْنِیْنَ وَ لَا یَقْتُلْنَ اَوْلَادَهُنَّ وَ لَا یَاْتِیْنَ بِبُهْتَانٍ یَّفْتَرِیْنَهٗ بَیْنَ اَیْدِیْهِنَّ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ नबी जब तुम्हारे हुज़ूर मुसल्मान औ़रतें ह़ाज़िर हों इस पर बैअ़त करने को कि **अल्लाह** का शरीक कुछ न ठहराएंगी और न चोरी करेंगी और न बदकारी और न अपनी औलाद को क़त्ल करेंगी और न वोह बोहतान लाएंगी जिसे अपने हाथों और पाउं

www.dawateislami.net

وَ اَرْجُلِهِنَّ وَ لَا یَعْصِیْنَكَ فِیْ مَعْرُوْفٍ فَبَایِعْهُنَّ وَ اسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۱۲﴾ (پ۲۸، الممتحنة: ۱۲)

के दरमियान या'नी मौज़ए विलादत में उठाएं और किसी नेक बात में तुम्हारी ना फ़रमानी न करेंगी तो उन से बैअ़त लो और **अल्लाह** से उन की मग़्फ़िरत चाहो बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है ।(1)

अह़ादीसे मुबा-रका में बैअ़त का ज़िक्र

सुवाल : क्या अह़ादीसे मुबा-रका में भी बैअ़त का ज़िक्र आया है ?

जवाब : जी हां ! अह़ादीसे मुबा-रका में भी बैअ़त का ज़िक्र आया है और येह बैअ़त मुख़्तलिफ़ चीज़ों म-सलन कभी तक़्वा व इत़ाअ़त पर, कभी लोगों की ख़ैर ख़्वाही और कभी ग़ैर मा'सियत (या'नी गुनाह के इलावा) वाले कामों में अमीर की इत़ाअ़त वग़ैरा पर हुवा करती थी । इस के इलावा दीगर कामों पर भी सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बैअ़त होना साबित है चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : हम ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मुश्किल और आसानी में, ख़ुशी और नाख़ुशी में ख़ुद पर तरजीह़ दिये जाने की सूरत में, सुनने और इत़ाअ़त करने पर बैअ़त की और इस पर बैअ़त की, कि हम किसी से उस के इक्तिदार के ख़िलाफ़ जंग नहीं करेंगे और हम जहां भी हों ह़क़ के सिवा कुछ न कहेंगे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के

1..... फ़तावा र-ज़विय्या, 26/586

www.dawateislami.net

बारे में मलामत करने वाले की मलामत से नहीं डरेंगे ।(1)

हज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि हम **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ एक मजलिस में थे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम लोग मुझ से इस पर बैअ़त करो कि तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ किसी को शरीक नहीं करोगे और ज़िना नहीं करोगे और चोरी नहीं करोगे और जिस शख़्स को **अल्लाह** तआ़ला ने क़त्ल करना ह़राम कर दिया है उसे बे गुनाह क़त्ल नहीं करोगे, तुम में से जिस शख़्स ने इस अ़ह्द को पूरा किया उस का अज्र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर है और जिस ने इन मुह़र्रमात में से किसी का इरतिकाब किया और उस को सज़ा दी गई वोह उस का कफ़्फ़ारा है और जिस ने इन में से किसी ह़राम को किया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस का पर्दा रखा तो उस का मुआ़-मला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द है अगर वोह चाहे तो उसे मुआ़फ़ कर दे और अगर चाहे तो उसे अ़ज़ाब दे ।(2)

हज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی **तफ़्सीरे कबीर** में नक़्ल फ़रमाते हैं : जब मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا में लय-लतुल उ़क़्बा को 70 सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बैअ़त की तो ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप अपने रब عَزَّوَجَلَّ के लिये और अपनी ज़ात के लिये जो शर्त़ चाहें मनवा लें । **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने

1 ...... مسلم، کتاب الامارۃ، باب وجوب طاعۃ الامراء...الخ، ص۱۰۲۴، حدیث:۱۸۰۹

2 ...... مسلم، کتاب الحدود، باب الحدود کفارات لأھلھا...الخ، ص۹۳۹، حدیث:۱۷۰۹

www.dawateislami.net

फ़रमाया : तेरे रब عَزَّوَجَلَّ के लिये येह शर्त़ है कि तुम उस की इबादत करो और उस के साथ किसी को शरीक न ठहराओ और मेरे लिये येह शर्त़ है कि तुम अपनी जानों और मालों को जिन चीज़ों से बाज़ रखते हो उन से मुझ को भी बाज़ रखना (या'नी जिस त़रह़ अपनी जानों और मालों की ह़िफ़ाज़त करते हो इसी त़रह़ मेरी ह़िफ़ाज़त करना) । तो सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! जब हम ऐसा कर लेंगे तो हमें क्या सिला मिलेगा ? तो **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जन्नत ।" सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : येह तो नफ़्अ़ मन्द बैअ़त है, हम इस बैअ़त को न तोड़ेंगे और न ही तोड़ने का मुत़ा-लबा करेंगे, इस मौक़अ़ पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

﴿اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰی مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ اَنْفُسَهُمْ وَ اَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ﴾

(پ۱۱، التوبۃ:۱۱۱) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक **अल्लाह** ने मुसल्मानों से उन के माल और जान ख़रीद लिये हैं इस बदले पर कि उन के लिये जन्नत है ।(1)

बैअ़त होने के फ़वाइदो ब-रकात

सुवाल : बैअ़त होने से क्या क्या फ़वाइदो ब-रकात ह़ासिल होते हैं ?

जवाब : किसी पीरे कामिल के हाथ में हाथ दे कर बैअ़त होने से पीरे कामिल से निस्बत ह़ासिल हो जाती है जिस की बदौलत बात़िन की इस्लाह़ के साथ साथ नेकियों से

(1) ..... تفسیرِ کبیر، پ۱۱، التوبۃ، تحت الآیۃ:۱۱۱، ۶/۱۵۰

www.dawateislami.net

महब्बत और गुनाहों से नफ़रत का जज़्बा बेदार होता है। पीरे कामिल की सोहबत और इस के फ़वाइद बयान करते हुए हज़रते सय्यिदुना फ़क़ीह अब्दुल वाहिद बिन आशिर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَادِر फ़रमाते हैं : आरिफ़े कामिल की सोहबत इख़्तियार करो। वोह तुम्हें हलाकत के रास्ते से बचाएगा। उस का देखना तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की याद दिलाएगा और वोह बड़े नफ़ीस त़रीक़े से नफ़्स का मुहा-सबा कराते हुए और "ख़त़राते क़ल्ब" (या'नी दिल में पैदा होने वाले शैत़ानी वसाविस) से महफ़ूज़ फ़रमाते हुए तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मिला देगा। उस की सोहबत के सबब तुम्हारे फ़राइज़ व नवाफ़िल महफ़ूज़ हो जाएंगे। "तस्फ़ियए क़ल्ब" (या'नी दिल की सफ़ाई) के साथ "ज़िक्रे कसीर" की दौलत मुयस्सर आएगी और वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मु-तअ़ल्लिक़ा सारे उमूर में तुम्हारी मदद फ़रमाएगा।[1]

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की बारगाह में सुवाल हुवा कि "मुरीद होना वाजिब है या सुन्नत ? नीज़ मुरीद क्यूं हुवा करते हैं ? मुर्शिद की क्यूं ज़रूरत है और इस से क्या क्या फ़वाइद हासिल होते हैं ?" तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने जवाबन इर्शाद फ़रमाया : मुरीद होना सुन्नत है और इस से फ़ाएदा हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इत्तिसाले मुसल्सल। ﴿ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ﴾ (پ۱، الفاتحہ:۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "रास्ता उन का जिन पर तू ने

1..... आदाबे मुर्शिदे कामिल, स. 82

www.dawateislami.net

एह़सान किया।" में इस की त़रफ़ हिदायत है, यहां तक फ़रमाया गया : مَن لَّا شَیْخَ لَہٗ فَشَیْخُہُ الشَّیْطٰن जिस का कोई पीर नहीं उस का पीर शैत़ान है।(1) सिह़्ह़ते अ़क़ीदत के साथ सिल्सिलए सह़ीह़ा मुत्तसिला में अगर इन्तिसाब बाक़ी रहा तो नज़र वाले तो इस के ब-रकात अभी देखते हैं जिन्हें नज़र नहीं वोह नज़्अ़ में, क़ब्र में, ह़श्र में इस के फ़वाइद देखेंगे।(2)

बैअ़त होने के फ़वाइद में से येह भी है कि येह पीराने इ़ज़ाम या इन सिल्सिलों के अकाबिरीन व बानियान अपने मुरीदीन व मु-तअ़ल्लिक़ीन से किसी भी वक़्त ग़ाफ़िल नहीं रहते और मुश्किल मक़ाम पर उन की मदद फ़रमाते हैं चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : बेशक सब अइम्मा व औलिया व उ़-लमाए रब्बानिय्यीन (व मशाइख़े किराम رَحِمَھُمُ اللہُ السَّلَام)

1..... इस की वज़ाह़त करते हुए आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं : हर बद मज़हब फ़लाह़ से दूर हलाकत में चूर है, मुत़्लक़न बे पीरा है और इब्लीस इस का पीर, अगर्चे ब ज़ाहिर किसी इन्सान का मुरीद हो बल्कि ख़ुद पीर बने राहे सुलूक में क़दम रखे न रखे हर त़रह لَا یُفْلِحُ وَشَیْخُہُ الشَّیْطَان (फ़लाह़ नहीं पाएगा और उस का पीर शैत़ान है।) का मिस्दाक़ है। सुन्नी सह़ीह़ुल अ़क़ीदा कि राहे सुलूक न पड़ा अगर फ़िस्क़ करे फ़लाह़ पर नहीं मगर फिर भी न बे पीरा है न इस का पीर शैत़ान, बल्कि जिस शैख़ जामेए़ शराइत़ का मुरीद हो उस का मुरीद है वरना मुर्शिदे आ़म का। (या'नी कलामुल्लाह व कलामुर्रसूल व कलामे अइम्मए शरीअ़तो त़रीक़त व कलामे उ़-लमाए दीन अहले रुश्दो हिदायत है इसी सिल्सिलए सह़ीह़ा पर कि अ़वाम का हादी कलामे उ़-लमा, उ़-लमा का रहनुमा कलामे अइम्मा, अइम्मा का मुर्शिद कलामे रसूल, रसूल का पेश्वा कलामुल्लाह جَلَّ وَعَلَا وَصَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم।) (फ़तावा र-ज़विय्या, 21/505, 519)

2..... फ़तावा र-ज़विय्या, 26/570 मुल-त-क़तन

www.dawateislami.net

अपने पैरव-कारों और मुरीदों की शफ़ाअ़त करते हैं, जब उन के मुरीद की रूह़ निकलती है, जब मुन्कर नकीर उस से क़ब्र में सुवाल करते हैं, जब ह़श्र में उस का नामए आ'माल खुलता है, जब उस से ह़िसाब लिया जाता है, जब उस के आ'माल तोले जाते हैं और जब वोह पुल सिरात़ पर चलता है तो इन तमाम मराह़िल में वोह उस की निगह्बानी करते हैं और किसी भी जगह उस से ग़ाफ़िल नहीं होते ।(1)

है इस्यां के बीमार का दम लबों पर
ख़ुदारा लो जल्दी ख़बर ग़ौसे आ'ज़म
तुम्हें मेरे ह़ालात की सब ख़बर है
परेशां हूं मैं किस क़दर ग़ौसे आ'ज़म

(वसाइले बख़्शिश)

पीरे कामिल की ब-र-कत से ईमान सलामत रहा

सुवाल : नज़्अ़ के वक़्त पीरे कामिल का अपने मुरीद की मदद करने का कोई वाक़िआ़ हो तो बराए करम बयान फ़रमा दीजिये ।

जवाब : जब नज़्अ़ का वक़्त होता है तो इस मुश्किल तरीन वक़्त में शैत़ान अपने चेलों को मरने वाले के दोस्तों और रिश्तेदारों की शक्लों में ले कर आ पहुंचता है जो उसे दीने इस्लाम से बहकाने की कोशिश करते हैं, अगर इन्सान किसी पीरे कामिल का मुरीद हो तो शैत़ान के उन ह़ीलों को नाकाम बनाते हुए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत और पीरे कामिल की

1 ...... ميزان الكبرى، ١/٦٥

www.dawateislami.net

ब-र-कत से अपना ईमान सलामत ले कर जाने में काम्याब हो जाता है इस ज़िम्न में एक ह़िकायत मुला-ह़ज़ा कीजिये चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 561 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत" सफ़ह़ा 493 पर है : "इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की नज़्अ़ का जब वक़्त आया, शैत़ान आया कि इस वक़्त पूरी जान तोड़ कोशिश करता है कि किसी त़रह़ इस (मरने वाले) का ईमान सल्ब हो जाए (या'नी छीन लिया जाए), अगर इस वक़्त फिर गया तो फिर कभी न लौटेगा। उस ने इन से पूछा कि तुम ने उ़म्र भर मुना-ज़रों मुबाह़सों में गुज़ारी, ख़ुदा को भी पहचाना ? आप ने फ़रमाया : बेशक ख़ुदा एक है। उस ने कहा : इस पर क्या दलील ? आप ने एक दलील क़ाइम फ़रमाई, वोह ख़बीस मुअ़ल्लिमुल म-लकूत (या'नी फ़िरिश्तों का उस्ताद) रह चुका है उस ने वोह दलील तोड़ दी। उन्हों ने दूसरी दलील क़ाइम की उस ने वोह भी तोड़ दी। यहां तक कि 360 दलीलें ह़ज़रत ने क़ाइम कीं और उस ने सब तोड़ दीं। अब येह सख़्त परेशानी में और निहायत मायूस। आप के पीर ह़ज़रत नज्मुद्दीन कुब्रा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه कहीं दूर दराज़ मक़ाम पर वुज़ू फ़रमा रहे थे, वहां से आप ने आवाज़ दी "कह क्यूं नहीं देता कि मैं ने ख़ुदा को बे दलील एक माना।" इस ह़िकायत से मा'लूम हुवा कि किसी मुर्शिदे कामिल के हाथ में हाथ दे देना चाहिये कि उन की बात़िनी तवज्जोह वस्वसए शैत़ानी को भी दफ़्अ़ करती

www.dawateislami.net

है और ईमान की हिफ़ाज़त का भी एक मज़्बूत ज़रीआ है।"

हिफ़ाज़त की फ़रमा दुआ ग़ौसे आ'ज़म
दमे नज़्अ़ शैत़ां न ईमान ले ले
है येह आप ही का कहा ग़ौसे आ'ज़म
मुरीदीन की मौत तौबा पे होगी
हूं मैं भी मुरीद आप का ग़ौसे आ'ज़म
मेरी मौत भी आए तौबा पे मुर्शिद !
न होगा बुरा ख़ातिमा ग़ौसे आ'ज़म
करम आप का गर हुवा तो यक़ीनन

मुरीद होने का मक़्सद

सुवाल : मुरीद होने का अस्ल मक़्सद भी इर्शाद फ़रमा दीजिये।

जवाब : मुरीद होने का अस्ल मक़्सद येह है कि इन्सान मुर्शिदे कामिल की रहनुमाई और बात़िनी तवज्जोह की ब-र-कत से सीधे रास्ते पर चल कर अपनी ज़िन्दगी शरीअ़त व सुन्नत के मुत़ाबिक़ गुज़ार सके और अगर राहे बात़िन व मा'रिफ़त पर चलना हो तो फिर बैअ़त होना ज़रूरी है क्यूं कि येह रास्ता इन्तिहाई कठिन और बारीक है जिसे बिग़ैर किसी रहबर के त़ै करना अपने आप को हलाकत पर पेश करना है लिहाज़ा इस रास्ते को काम्याबी व कामरानी के साथ त़ै करने के लिये इन्सान को मुर्शिदे कामिल की ज़रूरत होती है। हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : मुरीद को किसी मुर्शिद व उस्ताद की ह़ाजत होती है जो उस की सीधे रास्ते की त़रफ़ रहनुमाई करे क्यूं कि दीन का रास्ता इन्तिहाई बारीक है जब कि इस के मुक़ाबले में शैत़ानी रास्ते ब कसरत और नुमायां हैं तो जिस का कोई मुर्शिद न हो जो उस की तरबियत करे तो यक़ीनन शैत़ान उसे अपने

www.dawateislami.net

रास्ते की त़रफ़ ले जाता है। जो पुर ख़त़र वादियों में बिग़ैर किसी की रहनुमाई के चलता है वोह ख़ुद को हलाकत पर पेश करता है जैसे ख़ुद ब ख़ुद उगने वाला पौदा जल्द ही सूख जाता है और अगर वोह लम्बे अ़र्से तक बाक़ी भी रहे तो उस के पत्ते तो निकल आएंगे लेकिन वोह फलदार नहीं होगा। मुरीद पर ज़रूरी है कि वोह मुर्शिद का दामन इस त़रह़ थाम ले जिस त़रह़ अन्धा नह्र के किनारे अपनी जान नह्र पार कराने वाले के ह़वाले कर देता है और उस की इत्तिबाअ़ में किसी क़िस्म की मुख़ा-लफ़त नहीं करता और न ही उसे छोड़ता है।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि मुरीद होने में दीनी व उख़रवी फ़वाइद पेशे नज़र होने चाहिएं मगर बद क़िस्मती से फ़ी ज़माना बेश्तर लोगों ने "पीरी मुरीदी" जैसे अहम मन्सब को भी मह़ज़ ह़ुसूले दुन्या का ज़रीअ़ा बना रखा है। लोग पीरे कामिल का मे'यार येह समझते हैं कि पीर ता'वीज़ात या अ़-मलिय्यात में माहिर हो जो हर दुन्यवी मुश्किल ह़ल कर दिया करे, अगर्चे पीरे कामिल की ब-र-कत से बहुत सारे दुन्यवी मसाइल भी ह़ल होते हैं ताहम इसी चीज़ को पीरे कामिल का मे'यार समझ लेना और जहां कोई मस्अला ह़ल न हुवा वहां पीर साह़िब के कामिल होने में शुकूको शुबुहात में पड़ जाना सरासर जहालत व ह़माक़त है लिहाज़ा मुरीद होते वक़्त मुर्शिदे

(1) ...... احیاء العلوم، کتاب ریاضۃ النفس و تھذیب الاخلاق، بیان شروط الارادۃ...الخ، ۳/۹۳

www.dawateislami.net

कामिल की ह़क़ीक़ी पहचान और मुरीद होने के मक़ासिद को पेशे नज़र रखना ज़रूरी है।

अज़ पए ग़ौसुल वरा या मुस्त़फ़ा
मेरे ईमां की ह़िफ़ाज़त कीजिये
अज़ त़ुफ़ैले मुर्शिदी दिल से मेरे
दूर दुन्या की मह़ब्बत कीजिये

(वसाइले बख़्शिश)

मुर्शिदे कामिल के लिये चार शराइत़

सुवाल : मुर्शिदे कामिल कि जिस के हाथ पर बैअ़त करना दुरुस्त हो उस की क्या शराइत़ हैं ?

जवाब : मुर्शिदे कामिल कि जिस के हाथ पर बैअ़त करना दुरुस्त हो उस की शराइत़ बयान करते हुए आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : बैअ़त लेने और मस्नदे इर्शाद पर बैठने के लिये चार शर्त़ें ज़रूरी हैं : **एक** येह कि सुन्नी सह़ीह़ुल अ़क़ीदा हो इस लिये कि बद मज़हब दोज़ख़ के कुत्ते हैं और बद तरीन मख़्लूक़, जैसा कि ह़दीस में आया है। **दूसरी** शर्त़ ज़रूरी इल्म का होना, इस लिये कि बे इल्म ख़ुदा को पहचान नहीं सकता। **तीसरी** येह कि कबीरा गुनाहों से परहेज़ करना इस लिये कि फ़ासिक़ की तौहीन वाजिब है और मुर्शिद वाजिबुत्ता'ज़ीम है दोनों चीज़ें कैसे इकट्ठी होंगी। **चौथी** इजाज़ते सह़ीह़ मुत्तसिल हो जैसा कि इस पर अहले बात़िन का इज्माअ़ है। जिस शख़्स में इन शराइत़ में से कोई एक शर्त़ न हो तो उस को पीर नहीं

www.dawateislami.net

पकड़ना चाहिये ।[1]

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : जब मुरीद होना हो तो अच्छी त़रह़ तफ़्तीश कर लें, वरना अगर (किसी ऐसे को पीर बना लिया जो) बद मज़्हब हुवा तो ईमान से भी हाथ धो बैठेंगे ।

اے بسا ابلیس آدم روئے ہست[2]

پس بہر دستے نباید داد دست

कभी इब्लीस आदमी की शक्ल में आता है, लिहाज़ा हर हाथ में हाथ नहीं देना चाहिये (या'नी हर किसी से बैअ़त नहीं करनी चाहिये ।)

ख़त़ या टेलीफ़ोन के ज़रीए़ बैअ़त

सुवाल : क्या ख़त़, टेलीफ़ोन या इज्तिमाए़ आ़म में लाउड स्पीकर के ज़रीए़ बैअ़त हो सकती है ?

जवाब : फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 26 सफ़ह़ा 585 पर है : "ब ज़रीअ़ए क़ासिद (नुमायन्दा) या ख़त़ मुरीद हो सकता है ।" जब नुमायन्दे या ख़त़ के ज़रीए़ मुरीद हो सकता है तो टेलीफ़ोन और लाउड स्पीकर पर तो ब द-र-जए औला बैअ़त हो सकती है ।

साबिक़ा मुर्शिद से तजदीदे बैअ़त

सुवाल : अगर किसी से कुफ़्र सरज़द हो गया हो तो उसे अपने कुफ़्र

1..... फ़तावा र-ज़विय्या, 21/491 2..... बहारे शरीअ़त, 1/277, हिस्सा : 1

www.dawateislami.net

से तौबा करने के बा'द अपने साबिक़ा मुर्शिद से ही तजदीदे बैअ़त करना ज़रूरी है ?

जवाब : कुफ़्र बकने से जिस त़रह़ पिछले तमाम नेक आ'माल म-सलन नमाज़, रोज़ा और ह़ज वग़ैरा ज़ाएअ़ हो जाते हैं ऐसे ही बैअ़त भी ख़त्म हो जाती है, तौबा करने के बा'द साबिक़ा मुर्शिद या किसी भी जामेए़ शराइत़ पीर का मुरीद हुवा जा सकता है, साबिक़ा मुर्शिद से ही बैअ़त करना ज़रूरी नहीं ।

दूसरों को अपने पीर की बैअ़त की तरग़ीब दिलाना कैसा ?

सुवाल : ज़ैद को अपने पीर साह़िब से बहुत अ़क़ीदत है लिहाज़ा जो किसी के मुरीद नहीं हैं वोह उन्हें अपने पीर साह़िब से बैअ़त होने की तरग़ीब दिलाता है । बक्र इस पर ज़ैद को बुरा भला कहता है और ए'तिराज़ करता है कि तरग़ीब न दिलाओ जिसे मुरीद होना होगा वोह ख़ुद ही हो जाएगा । दोनों में ह़क़ ब जानिब कौन है ?

जवाब : पीर उमूरे आख़िरत के लिये बनाया जाता है ताकि उस की रहनुमाई और बात़िनी तवज्जोह की ब-र-कत से मुरीद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नाराज़ी वाले कामों से बचते हुए "रिज़ाए रब्बुल अनाम के म-दनी काम" के मुत़ाबिक़ अपनी ज़िन्दगी के शबो रोज़ गुज़ार सके । अब ग़ौर कर लिया जाए कि येह

www.dawateislami.net

बात नेकी है या बदी ? अगर नेकी है और यक़ीनन नेकी है तो इस की तरग़ीब दिलाने वाला नेकी की दा'वत देने वाला हुवा और उस का येह फ़े'ल हुक्मे क़ुरआनी ﴿ وَتَعَاوَنُوۡا عَلَى الۡبِرِّ وَالتَّقۡوٰى ﴾ (پ٦، المآئدۃ:٢) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** "और नेकी और परहेज़ गारी पर एक दूसरे की मदद करो।" में दाख़िल है लिहाज़ा ज़ैद सवाब का मुस्तह़िक़ है। अगर इस के तरग़ीब दिलाने पर कोई मुरीद हो कर नेकी के रास्ते पर गामज़न हो गया तो اِنۡ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ ज़ैद के लिये सवाबे जारिया का सामान होगा।

मुरीद होते हुए किसी दूसरे पीर का मुरीद होना

सुवाल : एक पीर के मुरीद होते हुए किसी दूसरे पीर से भी मुरीद हो सकते हैं या नहीं ? नीज़ किसी दूसरे पीर साहिब से त़ालिब होना कैसा है ?

जवाब : एक पीर के मुरीद होते हुए किसी दूसरे पीर से मुरीद नहीं हो सकते चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन वफ़ार عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡغَفَّار फ़रमाते हैं : जिस त़रह़ जहान के दो मा'बूद नहीं, एक शख़्स के दो दिल नहीं, औ़रत के ब-यक वक़्त दो शोहर नहीं इसी त़रह़ मुरीद के दो शैख़ नहीं।(1) अलबत्ता दूसरे जामेए़ शराइत़ पीर से बैअ़ते ब-र-कत करते हुए त़ालिब होने में ह़रज नहीं है। इसी त़रह़ के एक सुवाल के जवाब में आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान

(1) المننُ الکبریٰ، الباب الثامن، ص٣٤٦

www.dawateislami.net

عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الرَّحۡمٰن फ़रमाते हैं : जो शख़्स किसी शैख़ जामेए शराइत के हाथ पर बैअ़त हो चुका हो तो दूसरे के हाथ पर बैअ़त न चाहिये । अकाबिरे त़रीक़त फ़रमाते हैं : "لَا يُفۡلِحُ مُرِيۡدٌ بَيۡنَ شَيۡخَيۡنِ जो मुरीद दो पीरों के दरमियान मुश्तरक हो वोह काम्याब नहीं होता।" ख़ुसूसन जब कि उस से कुशूदे कार (या'नी मत़लब का हुसूल) भी हो चुका हो, ह़दीस में इर्शाद हुवा : مَنۡ رُزِقَ فِيۡ شَيۡءٍ فَلۡيَلۡزَمۡهُ जिसे **अल्लाह** तआ़ला किसी शै में रिज़्क़ दे वोह उस को लाज़िम पकड़े ।(1) दूसरे जामेए शराइत से त़-लबे फ़ैज़ में ह़रज नहीं अगर्चे वोह किसी सिल्सिलए सरीह़ा का हो मगर अपनी इरादत शैख़े अव्वल ही से रखे और उस से जो फ़ैज़ ह़ासिल हो उसे भी अपने शैख़ ही का फ़ैज़ जाने ।(2)

हां ! अगर कोई सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या में बैअ़त हो तो उसे किसी और से त़ालिब होना ज़रूरी नहीं क्यूं कि सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या तमाम सलासिल से अफ़्ज़ल है और तमाम सलासिल इसी की त़रफ़ राजेअ़ हैं। **फ़तावा र-ज़विय्या** में है : इन (या'नी ख़ानदाने मदारिया वालों) से त़ालिब होना हरगिज़ कुछ ज़रूर नहीं, बल्कि जब अफ़्ज़लुस्सलासिल सिल्सिला अ़लैह, आ़लिया, सह़ीह़ा, मुत्तसिला, क़ादिरिय्या, त़य्यिबा में शैख़ जामेए शराइत के हाथ पर फ़ख़्रे बैअ़त नसीब हो चुका है तो उसे दूसरी त़रफ़

1 ...... شعب الايمان، باب التوكل والتسليم، ٢/٨٩، حديث:١٢٤١

2 ..... फ़तावा र-ज़विय्या, 26/579

www.dawateislami.net

अस्लन तवज्जोह व परेशान नज़र ही न चाहिये।[1]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें अपने पीरो मुर्शिद का हमेशा वफ़ादार बनाए और इन्हें राज़ी रखने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

सदा पीरो मुर्शिद रहें मुझ से राज़ी
कभी भी न हों येह ख़फ़ा या इलाही
बना दे मुझे एक दर का बना दे
मैं हर दम रहूं बा वफ़ा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश)

पीरो मुर्शिद से फ़ैज़ ह़ासिल करने का त़रीक़ा

सुवाल : फ़ैज़ किसे कहते हैं ? नीज़ पीरो मुर्शिद से फ़ैज़ ह़ासिल करने का क्या त़रीक़ा है ?

जवाब : फ़ैज़ की ता'रीफ़ करते हुए मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं : फ़ैज़ ब-रकात और नूरानिय्यत का दूसरे पर इल्क़ा फ़रमाना है।[2] फ़ैज़ ह़ासिल करने का त़रीक़ा येह है कि मुरीद अपने पीरो मुर्शिद से कामिल मह़ब्बत करे। उस के अह़काम बजा लाए और हर वोह जाइज़ काम करे जिस से वोह ख़ुश व राज़ी हो। उस की कामिल ता'ज़ीमो तौक़ीर करे और अपने अक़्वाल व अफ़्आ़ल व ह़-रकातो स-कनात में उस की हिदायात के मुत़ाबिक़ (जो शरीअ़त के ख़िलाफ़ न हों) पाबन्द रहे ताकि उस से फ़ुयूज़ो ब-रकात ह़ासिल करने में काम्याब हो सके।

1...... फ़तावा र-ज़विय्या, 26/558　2...... फ़तावा र-ज़विय्या, 26/564

www.dawateislami.net

पीरो मुर्शिद से फ़ैज़ ह़ासिल करने के लिये ज़रूरी है कि मुरीद हमेशा अपने आप को कमालात से ख़ाली समझे अगर्चे कितना ही इल्मो फ़ज़्ल वाला क्यूं न हो कि कुछ होने की समझ इन्सान को कहीं का नहीं रहने देती चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ सा'दी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی के फ़रमान का ख़ुलासा है : भर लेने वाले को चाहिये कि जब किसी चीज़ के ह़ासिल करने का इरादा करे तो अगर्चे कमालात से भरा हुवा हो मगर कमालात को दरवाज़े पर ही छोड़ दे (या'नी आ़जिज़ी इख़्तियार करे) और येह ख़याल करे कि मैं कुछ जानता ही नहीं। ख़ाली हो कर आएगा तो कुछ पाएगा और जो अपने आप को भरा हुवा समझेगा तो याद रहे कि भरे बरतन में कोई और चीज़ नहीं डाली जा सकती।(1)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की सच्ची मह़ब्बत नसीब करे और इन के फ़ुयूज़ो ब-रकात से मालामाल फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِیِّ الْاَمِين صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

जो हो अल्लाह का वली उस का
फ़ैज़ दुन्या में आ़म होता है

(वसाइले बख़्शिश)

मुरीद और त़ालिब में फ़र्क़

सुवाल : मुरीद और त़ालिब में क्या फ़र्क़ है ?

जवाब : मुरीद और त़ालिब में फ़र्क़ बयान करते हुए आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحمَةُ رَبِّ الْعِزَّت **फ़तावा र-ज़विय्या**, जिल्द 26 सफ़ह़ा

(1) بوستانِ سعدی، ص ۱۴۰

www.dawateislami.net

558 पर फ़रमाते हैं : मुरीद ग़ुलाम है और त़ालिब वोह कि ग़ैबते शैख़ (या'नी मुर्शिद की ग़ैर मौजू-दगी) में ब ज़रूरत या बा वुजूदे शैख़ किसी मस्लहत से, जिसे शैख़ जानता है या मुरीदे शैख़ ग़ैर शैख़ से इस्तिफ़ादा करे। इसे जो कुछ उस से ह़ासिल हो वोह भी फ़ैज़े शैख़ ही जाने।(1)

कुत्ता कपड़ों से छू जाए तो.....?

सुवाल : कुत्ता कपड़ों से छू जाए तो क्या कपड़े नापाक हो जाते हैं ?

जवाब : कुत्ता कपड़ों से छू जाए तो कपड़े नापाक नहीं होते बशर्ते कि उस के बदन पर नजासत न लगी हो, वरना नापाक हो जाएंगे चुनान्चे सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : कुत्ता बदन या कपड़े से छू जाए, तो अगर्चे उस का जिस्म तर हो बदन और कपड़ा पाक है, हां अगर उस के बदन पर नजासत लगी हो तो और बात है या उस का लुआ़ब (थूक) लगे तो नापाक कर देगा।(2)

शौक़िय्या कुत्ता पालने का नुक़्सान

सुवाल : क्या शौक़िय्या कुत्ता पाल सकते हैं ?

1..... पीरी मुरीदी के बारे में मज़ीद तफ़्सीलात जानने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 275 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "आदाबे मुर्शिदे कामिल" का मुत़ा-लआ़ कीजिये।

(शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

2..... बहारे शरीअ़त, 1/395, ह़िस्सा : 2

www.dawateislami.net

जवाब : शौक़िय्या त़ौर पर कुत्ता नहीं पाल सकते। ह़दीसे पाक में है : जिस घर में कुत्ता या तस्वीर हो उस में (रह़मत के) फ़िरिश्ते दाख़िल नहीं होते।(1) शैख़ुल ह़दीस ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : बा'ज़ बच्चे कुत्तों के बच्चों को शौक़िय्या पालते और घरों में लाते हैं मां बाप को लाज़िम है कि बच्चों को इस से रोकें और अगर वोह न मानें तो सख़्ती करें ह़दीस में जिन कुत्तों के घर में रहने से रह़मत के फ़िरिश्तों के न आने का ज़िक्र है उन कुत्तों से मुराद वोही कुत्ते हैं जिन को पालना जाइज़ नहीं है।(2)

मा'लूम हुवा कि शौक़िय्या त़ौर पर कुत्ता नहीं रख सकते, अगर किसी ने रखा तो उस के अ़मल में से रोज़ाना एक क़ीरात़ सवाब कम होगा, अलबत्ता खेती और बकरियों की ह़िफ़ाज़त और शिकार करने के लिये रख सकते हैं जैसा कि हादिये राहे नजात, सरवरे काएनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नजात है : अगर कुत्ते एक मख़्लूक़ न होते तो मैं इन्हें क़त्ल करने का हुक्म देता पस हर सियाह कुत्ते को मार दो और जो लोग घरों में कुत्ता रखते हैं उन के अ़मल से रोज़ाना एक क़ीरात़ कम होता है मगर शिकार का कुत्ता, खेती की ह़िफ़ाज़त और बकरियों की ह़िफ़ाज़त के लिये कुत्ता (रख सकते हैं कि इन के रखने से सवाब में कमी

1 ...... بخاری، کتاب المغازی، باب ۱۲، ۳/۱۹، حدیث: ۴۰۰۲

2..... जन्नती ज़ेवर, स. 441

www.dawateislami.net

नहीं होती) ।[1]

फ़िक़्हे ह़-नफ़ी की मश्हूरो मा'रूफ़ किताब **फ़त्हुल क़दीर** में है : जानवर, खेती, मकान की ह़िफ़ाज़त और शिकार के लिये कुत्ता पालना जाइज़ है मगर इन सूरतों में भी कुत्तों को मकान के अन्दर न रखा जाए, हां ! अगर चोर या दुश्मन का ख़ौफ़ हो तो मकान के अन्दर भी रख सकते हैं ।[2]

हर ह़ाल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को याद करना चाहिये

सुवाल : उ़मूमन देखा गया है कि लोग जब किसी मुसीबत, परेशानी या बीमारी में मुब्तला होते हैं तो घबरा कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ रुजूअ़ करते हैं, दुआ़ और अवरादो वज़ाइफ़ की कसरत करते हैं, तो क्या ऐसी ह़ालत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को याद करना ज़ियादा अफ़्ज़ल है ?

जवाब : इन्सान को मुसीबत व राह़त, ख़ुशह़ाली व बदह़ाली हर ह़ाल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को याद करना चाहिये बल्कि राह़त व ख़ुशह़ाली में दुआ़ की ज़ियादा कसरत करे ताकि सख़्ती और रन्ज में भी दुआ़ क़बूल हो चुनान्चे बेचैन दिलों के चैन, रह़मते दारैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने चैन है : जिसे येह पसन्द हो कि मुश्किलात के वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की दुआ़ क़बूल फ़रमाए तो उसे चाहिये कि आसाइश

1 ...... ترمذی، کتاب الاحکام و الفوائد، باب ماجاء من أمسک ... الخ، ۳/۱۵۹، حدیث:۱۴۹۵

2 ...... فتح القدیر، کتاب البیوع، مسائل منثورہ، ۶/۲۴۶

www.dawateislami.net

के वक़्त दुआ़ की कसरत करे।[1] मुसीबत के वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को याद करना और राह़तो आसाइश के वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की याद से ग़ाफ़िल हो जाना मुसल्मानों का शेवा नहीं बल्कि कुफ़्फ़ार का त़रीक़ा है चुनान्चे पारह 11 **सूरए यूनुस** की आयत नम्बर 12 में ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَ اِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْۢبِهٖۤ اَوْ قَاعِدًا اَوْ قَآىٕمًاۚ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهٗ مَرَّ كَاَنْ لَّمْ یَدْعُنَاۤ اِلٰى ضُرٍّ مَّسَّهٗؕ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जब आदमी (या'नी काफ़िर) को तक्लीफ़ पहुंचती है हमें पुकारता है लैटे और बैठे और खड़े फिर जब हम उस की तक्लीफ़ दूर कर देते हैं चल देता है गोया कभी किसी तक्लीफ़ के पहुंचने पर हमें पुकारा ही न था।

इस आयते मुबा-रका के तह़्त ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़लाउद्दीन अ़ली बिन मुह़म्मद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : इस आयत का मक़्सद येह है कि इन्सान बला के वक़्त बहुत ही बे सब्रा है और राह़त के वक़्त निहायत ना शुक्रा, जब तक्लीफ़ पहुंचती है तो हर ह़ाल में दुआ़ करता है जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तक्लीफ़ दूर फ़रमा दे तो शुक्र बजा नहीं लाता और अपनी साबिक़ा ह़ालत की त़रफ़ लौट जाता है, येह ह़ाल ग़ाफ़िल का है। मोमिन आ़क़िल का ह़ाल इस के ख़िलाफ़ है वोह मुसीबत व बला पर सब्र करता है, राह़तो

[1] ترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء ان دعوۃ المسلم...الخ، ۵/۲۴۸، حدیث: ۳۳۹۳

www.dawateislami.net

आसाइश में शुक्र बजा लाता है, तक्लीफ़ व राहत के जुम्ला अहवाल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर तज़र्रोअ़ व ज़ारी और दुआ़ करता है और एक मक़ाम इस से भी आ'ला है जो मोमिनों में भी मख़्सूस बन्दों को हासिल होता है कि जब कोई मुसीबत व बला आती है तो उस पर वोह सब्र करते हैं, क़ज़ाए इलाही पर दिल से राज़ी रहते हैं और तमाम अहवाल पर शुक्र करते हैं।(1)

रोना मुसीबत का मत रो तू प्यारे नबी के दीवाने
कर्बो बला वाले शहज़ादों पर भी तू ने ध्यान किया
प्यारे मुबल्लिग़ मा'मूली सी मुश्किल पर घबराता है
देख हुसैन ने दीन की ख़ातिर सारा घर क़ुरबान किया

(वसाइले बख़्शिश)

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने एक म-दनी मुज़ा-करे में इर्शाद फ़रमाया कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मेरी कोशिश होती है कि ब ज़ाहिर कितनी ही मा'मूली बीमारी या परेशानी हो म-सलन नज़्ला ज़ुकाम हो या कोई और काम अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में बेहतरी के लिये रुजूअ़ करता हूं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी रहमत से वोह बीमारी या परेशानी दूर फ़रमा देता है जैसा कि एक बार हमारा म-दनी क़ाफ़िला आधी रात के वक़्त सिन्ध के एक शहर दादू पहुंचा, जिस इस्लामी भाई के घर जाना था उन का फ़ोन नम्बर तो था मगर हमारे पास फ़ोन करने की सहूलत

1 ...... تفسیر خازن، پ۱۱، یونس، تحت الآیۃ: ۱۲، ۲/۳۰۴

www.dawateislami.net

मुयस्सर न थी। हमारे एक इस्लामी भाई ने एक पेट्रोल पम्प पर जा कर फ़ोन के लिये दर-ख़्वास्त की तो उन्हों ने येह कह कर टाल दिया कि "फ़ोन पर ताला है और चाबी हमारे पास नहीं।" बस के अड्डे वाले ने भी फ़ोन नहीं करने दिया, इसी परेशानी के आ़लम में एक मस्जिद खुली नज़र आई हम उस में दाख़िल हो गए। दोगाना (दो रक्अ़त नफ़्ल नमाज़) अदा कर के बारगाहे ख़ुदा वन्दी में अपना मस्अला अ़र्ज़ किया। फिर हम ने बाहर निकल कर हिम्मत की और दोबारा पेट्रोल पम्प वाले के पास जा कर फ़ोन की इजाज़त त़लब की तो वोह बहुत मेहरबान हो गया और उस ने फ़ोन करने की इजाज़त दे दी और पैसे भी नहीं लिये बल्कि कमाल शफ़्क़त का मुज़ा-हरा करते हुए चाय की दा'वत भी दी।

न कर रद कोई इल्तिजा या इलाही
हो मक़्बूल हर इक दुआ़ या इलाही
रहे ज़िक्र आठों पहर मेरे लब पर
तेरा या इलाही तेरा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश)

दुआ़ मांगने की तरग़ीब व फ़ज़ाइल पर अह़ादीसे मुबा-रका

सुवाल : दुआ़ मांगने की तरग़ीब व फ़ज़ाइल पर चन्द अह़ादीसे मुबा-रका बयान फ़रमा दीजिये।

जवाब : क़ुरआन व ह़दीस में दुआ़ मांगने की बहुत तरग़ीब दिलाई गई है चुनान्चे पारह 24 **सू-रतुल मुअमिन** की आयत

www.dawateislami.net

नम्बर 60 में ख़ुदाए रहमान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْؕ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हारे रब ने फ़रमाया मुझ से दुआ़ करो मैं क़बूल करूंगा ।

इसी त़रह़ अह़ादीसे मुबा-रका में भी दुआ़ मांगने की बहुत ज़ियादा तरग़ीब दिलाई गई है नीज़ दुआ़ मांगने के फ़ज़ाइलो ब-रकात भी बयान फ़रमाए गए हैं चुनान्चे दुआ़ मांगने की तरग़ीब व फ़ज़ाइल पर 11 फ़रामीने मुस्त़फ़ा मुला-ह़ज़ा कीजिये : (1) ख़ुदा के बन्दो ! दुआ़ को लाज़िम पकड़ो ।(1) (2) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : ऐ फ़रज़न्दे आदम ! तू जब तक मुझ से दुआ़ मांगे जाएगा और उम्मीद रखेगा तेरे कैसे ही गुनाह हों बख़्शता रहूंगा और मुझे कुछ परवा नहीं ।(2) (3) मुझ पर दुरूद भेजो और दुआ़ में कोशिश करो ।(3) (4) दुआ़ में कमी न करो जो दुआ़ करता रहेगा हरगिज़ हलाक न होगा ।(4) (5) रात दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ मांगो कि दुआ़ मोमिन का हथियार है ।(5) (6) आ़फ़िय्यत की दुआ़ अक्सर मांग ।(6) (7) दुआ़ की कसरत करो कि दुआ़ क़ज़ाए मुबरम को रद करती है ।(7) (8) जिसे येह पसन्द हो कि **अल्लाह** तआ़ला

مدینہ

1 ...... تِرمِذِی، کتاب الدعوات، باب ما جاء فی دعاء النبی صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم، ۵/۳۲۱، حدیث:۳۵۵۹

2 ...... تِرمِذِی، کتاب الدعوات، باب فی فضل التوبۃ...الخ، ۵/۳۱۸، حدیث:۳۵۵۱

3 ...... نَسائی، کتاب السھو، باب کیف الصلاۃ...الخ، ص/۲۲۱، حدیث:۱۲۸۹

4 ...... مستدرك حاکم، کتاب الدعاء...الخ، باب لا یھلك مع الدعاء احد، ۲/۱۶۴، حدیث:۱۸۶۱

5 ...... مُسْنَد اَبِی یَعْلٰی، مسند جابر بن عبد اللّٰہ، ۲/۲۰۱، حدیث:۱۸۰۶

6 ...... مستدرک حاکم، کتاب الدعاء...الخ، باب سوال العفو والعافیۃ، ۲/۲۱۷، حدیث:۱۹۸۲

7 ...... کَنْزُ الْعُمَّال، کتاب الاذکار، الباب الثامن فی الدعاء، الجزء:۲، ۱/۲۸، حدیث:۳۱۱۷

www.dawateislami.net

सख़्तियों में उस की दुआ़ क़बूल फ़रमाए तो वोह नरमी में दुआ़ करता रहे।[1] (9) जो **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ न करेगा **अल्लाह** तआ़ला उस पर ग़ज़ब फ़रमाएगा।[2] (10) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : मैं अपने बन्दे के गुमान के पास हूं और मैं उस के साथ हूं जब मुझ से दुआ़ करे।[3] (11) एक बार हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ की फ़ज़ीलत इर्शाद फ़रमाई, तो एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : "اِذًا نُكْثِرُ" या'नी ऐसा है तो हम दुआ़ की कसरत करेंगे।" इर्शाद फ़रमाया : "اَللّٰهُ اَكْثَرُ" या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का करम बहुत ज़ियादा है।"[4]

क्या दुआ़ के लिये हाथ उठाना ज़रूरी है ?

सुवाल : क्या दुआ़ के लिये हाथ उठाना ज़रूरी है ? नीज़ नमाज़ के बा'द हाथों को उठा कर दुआ़ मांगना और हाथों को चेहरे पर फेरना कैसा है ?

जवाब : दुआ़ बिग़ैर हाथ उठाए बल्कि बिग़ैर ज़बान हिलाए भी दिल ही दिल में मांगी जा सकती है, अलबत्ता "दुआ़ के लिये हाथ उठाना दुआ़ के आदाब में से है।"[5] लिहाज़ा

مدینہ

1 ...... تِرمِذِی، کتاب الدعوات، باب ما جاء ان دعوة المسلم...الخ، ۲۴۸/۵، حدیث: ۳۳۹۳

2 ...... تِرمِذِی، کتاب الدعوات، باب منہ (ت: ۲) ۲۴۴/۵، حدیث: ۳۳۸۴

3 ...... مُسلِم، کتاب الذکر...الخ، باب فضل الذکر...الخ، ص ۱۴۴۲، حدیث: ۲۶۷۵

4 ...... تِرمِذِی، احادیث شتّٰی، باب فی انتظار...الخ، ۳۳۴/۵، حدیث: ۳۵۸۴

5 ...... الحصن الحصین، آداب الدعاء، ص ۲۴

www.dawateislami.net

दुआ़ के तमाम तर आदाब को मल्हूज़े ख़ातिर रख कर ही दुआ़ मांगी जाए ताकि दुआ़ क़बूलिय्यत के ज़ियादा क़रीब हो । रही बात नमाज़ के बा'द हाथों को उठा कर दुआ़ मांगने और इन्हें चेहरे पर फेरने की तो इस के बारे में आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : नमाज़ के बा'द दुआ़ मांगना सुन्नत है और हाथ उठा कर दुआ़ मांगना और बा'दे दुआ़ मुंह पर हाथों को फेर लेना येह भी सुन्नत से साबित है ।(1)

दुआ़ के बा'द दोनों हाथ चेहरे पर फेरने में ह़िक्मत

सुवाल : दुआ़ के बा'द दोनों हाथ चेहरे पर फेरने में क्या ह़िक्मत है ?

जवाब : दुआ़ के बा'द दोनों हाथ चेहरे पर फेरने में येह ह़िक्मत है कि दुआ़ में जो ख़ैरो ब-र-कत ह़ासिल हुई वोह चेहरे से मस हो जाए चुनान्चे रईसुल मु-तकल्लिमीन ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان "अह़सनुल विआ़-इ लि आदाबिद्दुआ़अ" में फ़रमाते हैं : "बा'दे फ़राग़ (या'नी दुआ़ से फ़ारिग़ होने के बा'द) दोनों हाथ चेहरे पर फेरे कि वोह ख़ैरो ब-र-कत जो ब ज़रीअ़ए दुआ़ ह़ासिल हुई अशरफ़ुल आ'ज़ा या'नी चेहरे से मुलाक़ी (या'नी मस) हो ।" इस के ह़ाशिये "ज़ैलुल मुद्दआ़-इ लि अह़सनिल विआ़अ" में आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت ह़दीसे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह**

(1)..... फ़तावा र-ज़विय्या, 6/202

www.dawateislami.net

इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में हाथ उठा कर दुआ़ व सुवाल करो तो उन्हें मुंह पर फेर लो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ शर्मो करम वाला है। जब बन्दा दोनों हाथ उठाता और सुवाल करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हाथ ख़ाली फेरने से शरमाता है लिहाज़ा उस ख़ैर को अपने चेहरे पर मस्ह़ करो।(1)_(2)

❄ ... ❄ ... ❄ ... ❄ ... ❄

पीर होने के लिये सय्यिद होना ज़रूरी नहीं

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : (पीर होने के लिये सय्यिद और आले रसूल होने को ज़रूरी समझना) येह मह़ज़ बात़िल है, पीर होने के लिये वोही चार शर्तें दरकार हैं, सादाते किराम से होना कुछ ज़रूर नहीं। हां ! इन शर्तों के साथ सय्यिद भी हो तो नूरुन अ़ला नूर। बाक़ी इसे शर्त ज़रूरी ठहराना तमाम सलासिले त़रीक़त का बात़िल करना है। सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या सिल्सि-लतुज़्ज़हब में सय्यिदुना इमाम अ़ली रज़ा और हु़ज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के दरमियान जितने ह़ज़रात हैं कोई सादाते किराम से नहीं और सिल्सिलए आ़लिया चिश्तिया में तो अमीरुल मुअमिनीन मौला अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के बा'द ही से इमाम ह़सन बसरी (عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی) हैं कि न सय्यिद न क़ुरैशी न अ़-रबी और सिल्सिलए आ़लिया नक़्श बन्दिया का ख़ास आग़ाज़ ही हु़ज़ूर सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से है, इसी त़रह़ दीगर सलासिल।

(फ़तावा र-ज़विय्या, 26/576)

1..... फ़ज़ाइले दुआ़, स. 94

2..... दुआ़ के फ़ज़ाइलो ब-रकात और इस के आदाब के बारे में तफ़्सीली मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 318 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "फ़ज़ाइले दुआ़" का मुत़ा-लआ़ कीजिये। (शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

www.dawateislami.net

ماخذ و مراجع

قرآن پاک	❄ ❄ ❄ ❄	❄ ❄ ❄ ❄	❄ ❄ ❄ ❄
نام کتاب	**مطبوعہ**	**نام کتاب**	**مطبوعہ**
کنز الایمان	مکتبۃ المدینہ ۱۴۳۲ھ	مسند ابی یعلی	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۸ھ
التفسیر الکبیر	دار احیاء التراث العربی ۱۴۲۰ھ	الحصن الحصین	المکتبۃ العصریہ بیروت ۱۴۲۵ھ
تفسیر خازن	المطبعۃ المیمنیہ مصر ۱۳۱۷ھ	فتح القدیر	کوئٹہ
نور العرفان	پیر بھائی کمپنی مرکز الاولیا لاہور	فتاویٰ رضویہ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیا لاہور
صحیح البخاری	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ	بہارِ شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
صحیح مسلم	دار ابن حزم بیروت ۱۴۱۹ھ	جنتی زیور	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
سنن الترمذی	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ	احیاء علوم الدین	دار صادر بیروت ۲۰۰۰ء
سنن النسائی	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۶ھ	المنن الکبریٰ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۶ھ
المستدرک	دار المعرفہ بیروت ۱۴۱۸ھ	المیزان الکبریٰ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۲۰۰۹ء
جمع الجوامع	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۱ھ	بوستانِ سعدی	انتشارات عالمگیر کتابخانہ ایران
شعب الایمان للبیہقی	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۱ھ	آدابِ مرشدِ کامل	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
کنز العمال	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ	فضائلِ دعا	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	2	मुरीद होते हुए किसी दूसरे पीर का मुरीद होना	17
पीरी मुरीदी की शर-ई हैसिय्यत	2	पीरो मुर्शिद से फ़ैज़ ह़ासिल करने का त़रीक़ा	19
अह़ादीसे मुबा-रका में बैअ़त का ज़िक्र	5	मुरीद और त़ालिब में फ़र्क़	20
बैअ़त होने के फ़वाइदो ब-रकात	7	कुत्ता कपड़ों से छू जाए तो.....?	21
पीरे कामिल की ब-र-कत से ईमान सलामत रहा	10	शौक़िय्या कुत्ता पालने का नुक़्सान	21
मुरीद होने का मक़्सद	12	हर ह़ाल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को याद करना चाहिये	23
मुर्शिदे कामिल के लिये चार शराइत़	14	दुआ़ मांगने की तरग़ीब व फ़ज़ाइल पर अह़ादीसे मुबा-रका	26
ख़त़ या टेलीफ़ोन के ज़रीए़ बैअ़त	15	क्या दुआ़ के लिये हाथ उठाना ज़रूरी है ?	28
साबिक़ा मुर्शिद से तजदीदे बैअ़त	15	दुआ़ के बा'द दोनों हाथ चेहरे पर फेरने में ह़िक्मत	29
दूसरों को अपने पीर की बैअ़त की तरग़ीब दिलाना कैसा ?	16	मआख़िज़ो मराजेअ़	31

www.dawateislami.net

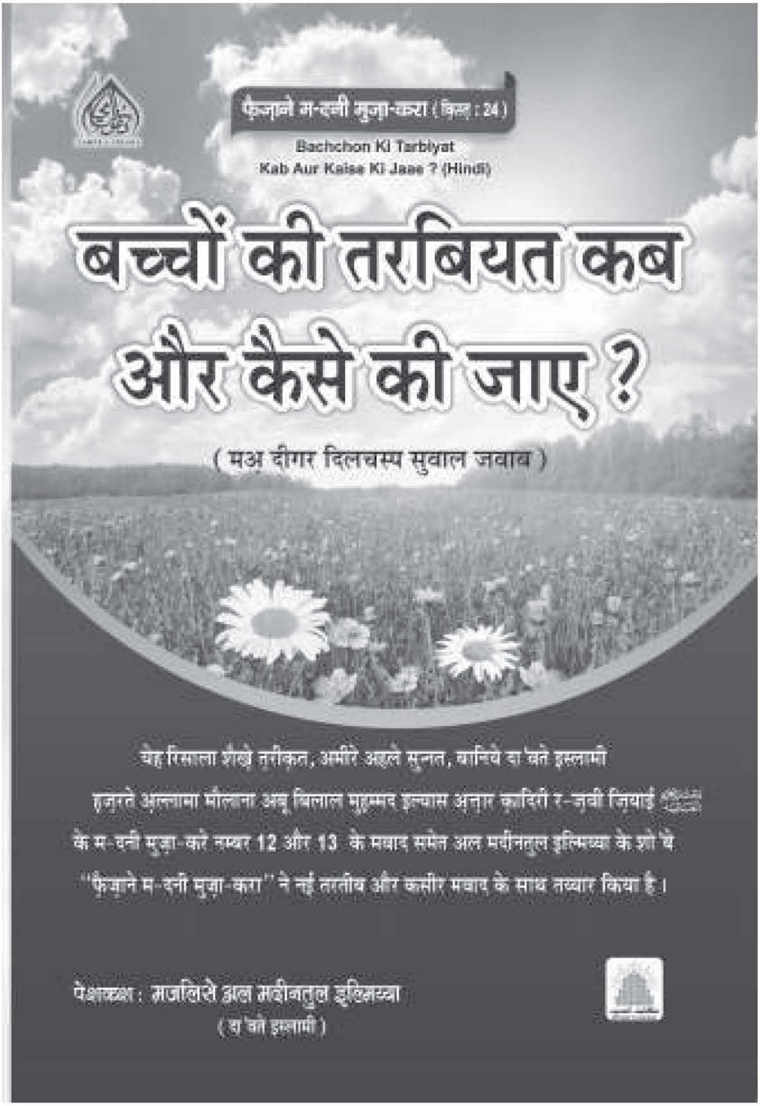

www.dawateislami.net

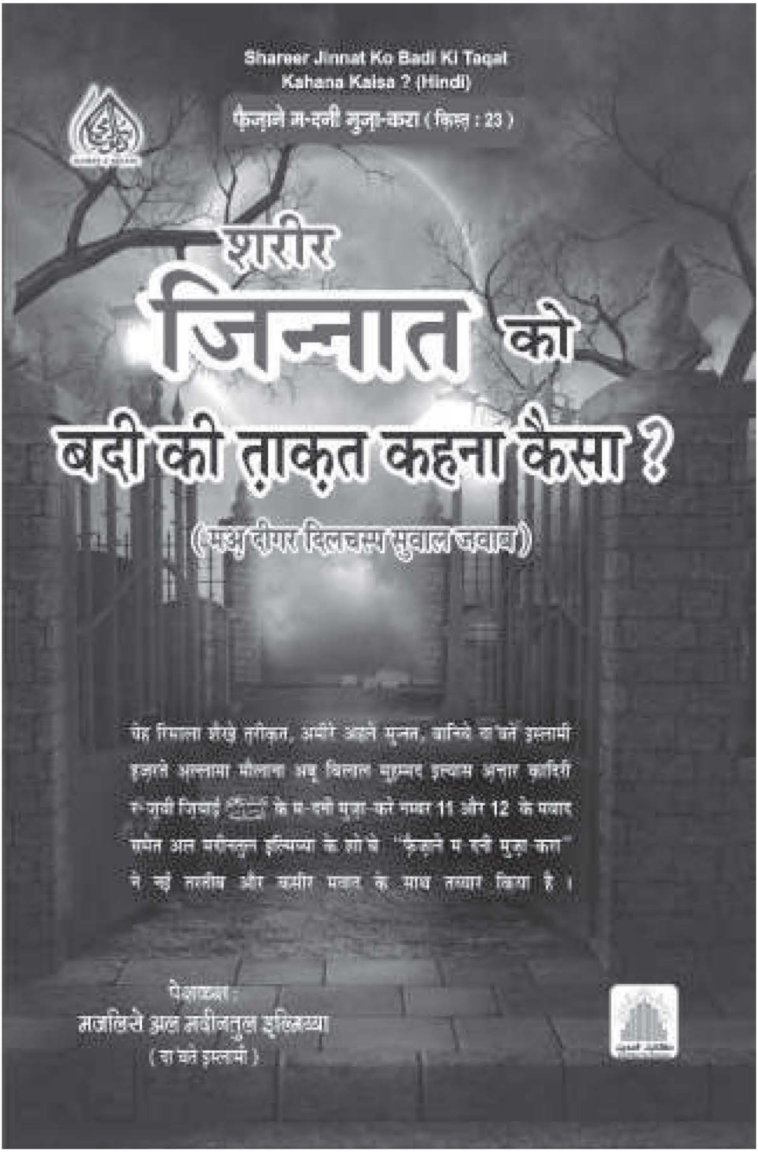

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा़रात बा'द नमाज़े इशा आप के यहां होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िले** में आशिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना **"फ़िक्रे मदीना"** के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा म-दनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ के लिये **"म-दनी इन्आ़मात"** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **"म-दनी क़ाफ़िलों"** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

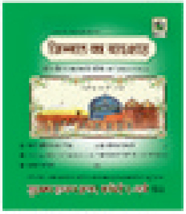

ISBN
0133108

मक-त-बतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

❁ अह़मदआबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिर्ज़ापुर, अह़मदआबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200

❁ देहली :- मक-त-बतुल मदीना, उर्दू मार्केट, मटिया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली - 6, फ़ोन : 011-23284560

❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा स्ट्रीट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997

❁ ह़ैदरआबाद :- मक-त-बतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, ह़ैदरआबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 24572786

E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com, Web : www.dawateislami.net

www.dawateislami.net